EDU TERIA
E - D.N.A
Daily Newspaper Analysis
Prelims Mains Essay
By: - Aarav Anand
Date: 13 Dec 2025
Source:- जनसत्ता

नवंबर में रूस से कच्चे तेल का आयात बढ़ा

पांच माह के उच्च स्तर पर पहुंचा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 दिसंबर।

भारत का रूस से कच्चा तेल आयात नवंबर में चार फीसद बढ़कर पांच महीनों में सबसे अधिक 2.6 अरब यूरो तक पहुंच गया। इस तेल से परिष्कृत ईंधन की बड़ी मात्रा आस्ट्रेलिया को निर्यात की गई जिसकी वजह से इस देश को निर्यात नवंबर में 69 फीसद बढ़ गया। यूरोप के एक शोध संस्थान ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

'ऊर्जा और स्वच्छ वायु अनुसंधान केंद्र' (सीआरईए) ने एक रपट में कहा कि रूसी कच्चे तेल के मामले में भारत नवंबर में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा खरीदार रहा। इसके पहले अक्तूबर में भारत ने रूस से 2.5 अरब यूरो का कच्चा तेल खरीदा था। नवंबर में रूस के कुल कच्चे तेल निर्यात का 47 फीसद चीन, 38 फीसद भारत, छह फीसद तुर्किए और छह फीसद यूरोपीय संघ के हिस्से गया।

सीआरईए ने कहा कि भारत का रूस से कच्चे तेल का आयात अक्तूबर की तुलना में चार फीसद बढ़ गया जबकि कुल आयात मात्रा लगभग स्थिर रही। यह पिछले पांच महीनों में सर्वाधिक खरीद रही। संस्था का अनुमान है कि दिसंबर में भी यह खरीद बढ़ सकती है, क्योंकि रूसी तेल पर अमेरिकी प्रतिबंध लागू होने से पहले कुछ तेलवाहक जहाज रवाना हुए थे। अमेरिका ने 22 अक्तूबर को रूस की बड़ी तेल कंपनियों रोसनेफ्ट एवं ल्यूकआयल पर प्रतिबंध लगा दिए थे। यूक्रेन युद्ध के लिए रूस की धन आपूर्ति सीमित करने के इरादे से यह पाबंदी लगाई गई थी।

इन प्रतिबंधों के बाद रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचपीसीएल, एचपीसीएल-मित्तल एनर्जी और मैंगलोर रिफाइनरी एंड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड ने रूसी तेल का आयात अस्थायी रूप से रोक दिया है। हालांकि, इंडियन आयल कारपोरेशन (आइओसी) जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां अब भी गैर-प्रतिबंधित रूसी आपूर्तिकर्ताओं से खरीद जारी रखे हुए हैं।

सीआरईए ने कहा कि नवंबर में जहां निजी तेल कंपनियों के आयात में हल्की गिरावट आई, वहीं सरकारी तेल कंपनियों ने रूसी कच्चे तेल की खरीद 22 फीसद बढ़ा दी। दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक भारत 2022 में यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद रूस से रियायती दरों पर तेल खरीदने वाला सबसे बड़ा ग्राहक बन गया।

सरकार का फैसला, ग्रामीण क्षेत्रों में अब 125 दिन काम मिलेगा

जनसत्ता ब्यूरो/एजंसी
नई दिल्ली, 12 दिसंबर।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने शुक्रवार को महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) का नाम बदलने और कार्य दिवसों की संख्या बढ़ाने वाले विधेयक को मंजूरी दे दी।

विधेयक के मुताबिक, इस योजना का नाम बदलकर अब 'पूज्य बापू ग्रामीण रोजगार योजना' कर दिया जाएगा और कार्य दिवसों की संख्या वर्तमान में 100 दिनों से बढ़ाकर 125 दिन कर दी जाएगी। इसे 2005 में लागू किया गया था।

सूत्रों ने बताया कि विधेयक को सरकार की मंजूरी से मनरेगा का नाम बदलने व कार्य दिवसों की संख्या बढ़ाने का रास्ता साफ हो गया है। मनरेगा के तहत उन परिवारों को प्रत्येक वित्त वर्ष में 100 दिन तक के रोजगार की गारंटी है, जिनके वयस्क सदस्य अकुशल शारीरिक श्रम के लिए स्वेच्छा से सहमत होते हैं।

–कैबिनेट फैसलों की खबर

आक्सफोर्ड विवि के अध्ययनकर्ताओं का 30,000 प्रजातियों पर अध्ययन | संकट | अत्यधिक गर्मी और जमीन के उपयोग में बदलाव है वजह

सदी के अंत तक दुनिया में जानवरों की 8,000 प्रजातियों के लुप्त होने का खतरा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 दिसंबर।

अत्यधिक गर्मी और जमीन के उपयोग में बदलाव की वजह से इस सदी के आखिर तक दुनिया भर में जानवरों की करीब 8,000 प्रजातियां पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। यह तथ्य एक अध्ययन में सामने आया है।

ब्रिटेन के आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अध्ययनकर्ताओं के नेतृत्व में एक अंतरराष्ट्रीय दल ने उभयचरों, पक्षियों, स्तनपायी और रेंगने वाले जीवों की करीब 30,000 प्रजातियों पर अध्ययन किया। ग्लोबल चेंज बायोलाजी जर्नल में छपे अध्ययन में बताया गया है कि 2100 तक 7,895 कशेरुकी प्रजातियां अत्यधिक गर्मी और भूमि उपयोग परिवर्तन के कारण वैश्विक विलुप्ति का सामना कर सकती हैं।

हर प्रजाति के लिए सही पर्यावास के आंकड़े 'इंटरनेशनल यूनियन फार कंजर्वेशन आफ नेचर' (आइसीयूएन) से लिए गए थे और प्रजातियों के लिए भविष्य की प्रजातियों के प्रकार का मानचित्र 'लैंड-यूज हार्मोनाइजेशन 2' (एलयूएच-2) से लिए गए थे, जिसका प्रबंधन अमेरिका का मैरीलैंड विश्वविद्यालय करता है।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भूगोल व पर्यावरण स्कूल के अध्ययनकर्ता रयूट वर्डी ने कहा कि हमारा अध्ययन कई खतरों के संभावित असर पर एक साथ विचार करने के महत्त्व पर जोर देते हैं, ताकि उनके संभावित असर का बेहतर अंदाजा लगाया जा सके। यह जैव विविधता को होने वाले बड़े नुकसान को रोकने के लिए दुनिया भर में विभिन्न प्रकार के कदम उठाने की जरूरत पर और बल देता है। अध्ययन में चार परिदृश्यों पर विचार किया गया। इनमें से सबसे गंभीर परिदृश्य में

ग्लोबल चेंज बायोलाजी जर्नल में छपे अध्ययन में बताया गया है कि 2100 तक 7,895 कशेरुकी प्रजातियां अत्यधिक गर्मी और भूमि उपयोग परिवर्तन के कारण वैश्विक विलुप्ति का सामना कर सकती हैं।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भूगोल व पर्यावरण स्कूल के अध्ययनकर्ता रयूट वर्डी ने कहा कि हमारा अध्ययन कई खतरों के संभावित असर पर एक साथ विचार करने के महत्त्व पर जोर देते हैं, ताकि उनके संभावित असर का बेहतर अंदाजा लगाया जा सके।

प्रजातियों को उस क्षेत्र के 52 फीसद हिस्से में खराब हालात का सामना करना पड़ सकता है, जहां वे फैली हुई हैं। सबसे अच्छे परिदृश्य में प्रजातियां के 10 फीसद पर ही प्रभाव पड़ेगा।

जलवायु और भूमि उपयोग में बदलाव का मिला-जुला असर साहेल (जैसे, सूडान, चाड और नाइजर), मध्य पूर्व और ब्राजील जैसे इलाकों में खास तौर पर बहुत अधिक होने का अनुमान है। अध्ययनकर्ताओं ने कहा कि ये नतीजे पिछली अध्ययन से मिलते-जुलते हैं, जो दिखाते हैं कि भविष्य के परिदृश्य में भूमि उपयोग में सबसे बड़े बदलाव होंगे, जिसमें जलवायु परिवर्तन को कम करने और उसके हिसाब से ढलने में बड़ी चुनौतियां होंगी।

दल ने कहा कि यह अध्ययन नीति बनाने में मदद कर सकता है और यह बताता है कि भविष्य में पर्यावरण में होने वाले बदलाव कैसे वैश्विक जैव विविधता को पूरी तरह से बदल सकते हैं। यह अध्ययन एक-दूसरे से जुड़े खतरों को पहचानने और उन्हें कम करने के महत्त्व पर भी जोर देती है।

कृषि सेहत में सुधार की नई संभावना

कृषि क्षेत्र में होम्योपैथी का प्रयोग भविष्य में उत्पादन में वृद्धि, कीट प्रतिरोध और खेती की समग्र सेहत सुधारने का कारगर माध्यम बन सकता है। भारत में भी इस दिशा में कई अनुसंधान और प्रयोग हो रहे हैं। इसकी विशेषता यह है कि कृषि के महंगे तरीकों की तुलना में फसल लागत कम होगी।

ऋतुपर्ण दवे

मीठी गोलियों से इलाज के लिए अपनी विशेष पहचान रखने वाली होम्योपैथी यदि कृषि क्षेत्र में भी सफलता का परचम फहराने लगे, तो कई समस्याओं का समाधान मुमकिन हो सकेगा। यह पद्धति निकट भविष्य में रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों के बजाय होम्योपैथिक उपचारों के जरिए फसलों में वृद्धि, कीट प्रतिरोध और कृषि क्षेत्र की समग्र सेहत सुधारने का कारगर माध्यम बन सकती है। भारत में भी इस दिशा में कई अनुसंधान और प्रयोग हो रहे हैं। इस पद्धति की विशेषता यह है कि इसमें पौधों को आंतरिक रूप से मजबूत बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, ताकि प्राकृतिक तौर पर बीमारियों और कीटों से लड़ सकें। 'कृषि-होम्योपैथी' से अन्य कई लाभ भी भविष्य में किसानों को मिल सकेंगे। इसमें विशेष रूप से मिट्टी में रासायनिक उर्वरकों से हुए नुकसान एवं उसमें समाए रासायनिक अवशेषों को खत्म करना और मिट्टी की सेहत को बेहतर बनाना भी शामिल है।

इस पद्धति की सबसे बड़ी खासियत यह होगी कि इससे महंगे और पारंपरिक तरीकों की तुलना में कृषि लागत कम होगी। कृषि क्षेत्र में निश्चित रूप से यह बड़ा और क्रांतिकारी बदलाव लाने वाला कदम हो सकता है। भविष्य में कृषि क्षेत्र, 'एग्रो-होम्योपैथी' अपनाए जाने से सुधार की एक नई दिशा में आगे बढ़ेगा। वास्तव में 'एग्रो-होम्योपैथी' पौधों की जीवन शक्ति और आंतरिक प्रक्रियाओं को मजबूत करती है, जिससे वे न केवल अपनी पूरी क्षमता से बढ़ सकते हैं, बल्कि प्राकृतिक रूप से खुद को भी दुरुस्त कर सकते हैं। इस पद्धति से न केवल महंगे, बल्कि जरूरत के वक्त अनुपलब्ध रहने वाले रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में भी कमी आएगी। इसी पद्धति से वह विकल्प भी मिलेगा, जिससे कृषि रसायनों और कीटनाशकों का उपयोग या तो कम हो जाएगा या फिर पूरी तरह से समाप्त हो सकेगा। यह हानिकारक रसायनों और उनके अवशेषों के जोखिम को समाप्त करने की ओर भी प्रभावी कदम होगा।

होम्योपैथिक दवाएं कीटों को सीधे नहीं मार कर पौधों की जैविक प्रणालियों को कुछ इस तरह से प्रभावित करती हैं, ताकि वे अपना प्राकृतिक रक्षा तंत्र, अपनी जरूरत के हिसाब से विकसित और सक्रिय कर सकें। कृषि क्षेत्र में होम्योपैथी का उपयोग ठीक उसी सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें किसी बीमारी को जड़ से समाप्त करने के लिए धीरे-धीरे दवाओं से उसे काबू किया जाता है। वैसे भी होम्योपैथी दवाओं में प्रतिकूल असर की संभावनाएं न के बराबर होती हैं। यही सिद्धांत वनस्पतियों और मिट्टी के लिए भी उपयोग किया जाता है। यह पौधों की आनुवंशिक गतिविधियों और चयापचय यानी 'मेटाबालिज्म' में परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रेरित करता है, जिससे रक्षा प्रणालियां सक्रिय होती हैं।

कृषि क्षेत्र में होम्योपैथिक दवाओं का सफल प्रयोग हालांकि कई दशकों से हो रहा है। मगर यह केवल कुछ जानकार अपने स्तर पर ही करते रहे हैं। मगर जब विश्व में इसको लेकर शोध और परीक्षण बढ़े, तो लोगों की इसमें जिज्ञासा बढ़ी और अब यह चर्चा का विषय भी बन गया है। मनुष्य को होम्योपैथी से यह विश्वास दिलाया जाता है कि यह उनकी बीमारी की जड़ तक पहुंच कर उसका समाधान करती है। लगभग यही तरीका कृषि

क्षेत्र में भी अपनाया जाता है। इतना कहा जा सकता है कि वैश्विक स्तर पर होम्योपैथी की नई शाखा यानी 'एग्रो-होम्योपैथी' निकट भविष्य में कृषि की सेहत सुधारने के लिए एक मजबूत विकल्प बन सकती है। बूंदों में समाहित होम्योपैथी दवाओं का सत पानी में मिल कर खेती-किसानी को भी स्वस्थ और उपयोगी बना सकता है। लागत के लिहाज से यह महंगे उर्वरकों और रसायनों की तुलना में बेहद सस्ता होगा। कम लागत की होम्योपैथिक दवाएं भविष्य में पेड़-पौधों पर निर्भर रहने वाले जीव-जंतुओं को भी रसायनों की चपेट में आकर असमय विलुप्त होने से बचा सकेंगी। भारत में होम्योपैथी दवाओं के कई जगह परीक्षण हो चुके है। सर्वविदित है कि होम्योपैथी दवाएं आंतरिक प्रतिरोध विकसित करने में कारगर हैं। इस चिकित्सा पद्धति से उपचारित जीव रोगों के प्रति कम संवेदनशील होते हैं। इसी सिद्धांत पर कृषि होम्योपैथी मिट्टी के स्वास्थ्य और उर्वरता को बनाए रखते हुए पौधों की वृद्धि करती है और इससे उपज भी बढ़ती है।

> **भारत में कृषि-होम्योपैथी का पुदुचेरी में प्रयोग चर्चा में है। यहां शोधकर्ताओं ने किसानों के साथ मिल कर जैविक खेती में एक कदम और आगे जाकर होम्योपैथिक कृषि का सफल प्रयोग किया है। इससे जहां खेती के लिए पानी की खपत घटी, वहीं जल प्रदूषण कम हुआ और भूजल स्तर भी बढ़ा। वर्ष 2018 में कृषि क्षेत्र में होम्योपैथी के उपयोग की संभावनाओं का पता लगाने के लिए शुरू हुई इस परियोजना की सफलता का अंदाजा इसी से लगता है कि कुछ ही समय में इसे नाबार्ड का समर्थन मिला। होम्योपैथिक पद्धति ने न केवल फसलों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई, बल्कि मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए रसायनों पर निर्भरता कम कर दी।**

भारत में कृषि-होम्योपैथी का पुदुचेरी में किया गया प्रयोग चर्चा में है। यहां शोधकर्ताओं ने किसानों के साथ मिल कर जैविक खेती के साथ एक कदम और आगे जाकर होम्योपैथिक खेती का सफल प्रयोग किया है। एक बड़ी विशेषता यह भी सामने आई कि इससे जहां पानी की खपत घटी, वहीं न केवल जल प्रदूषण कम हुआ, बल्कि भूजल स्तर भी बढ़ा। वर्ष 2018 में कृषि क्षेत्र में होम्योपैथी के उपयोग की संभावनाओं का पता लगाने के लिए शुरू हुई परियोजना की सफलता का अंदाजा इसी से लगता है कि कुछ ही समय में इसे नाबार्ड का समर्थन मिल गया। प्रयोगशाला से शुरू हुए परीक्षण जब खेतों तक पहुंचे तो उसकी पहली फसल भिंडी में कमाल का असर दिखा। बाद में धान की फसल में भी इसका प्रयोग सफल रहा। इसके बाद फसलों के तीनों सीजन में भी इस प्रयोग ने कमाल दिखाया। होम्योपैथिक दवाओं ने न केवल फसलों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई, बल्कि मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए रसायनों पर निर्भरता कम से कम कर दी। कृषि-होम्योपैथी के मिश्रण ने जहां पत्तियों को नई जान दी, वहीं पौधों की प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाई। इतना ही नहीं मिट्टी में मौजूद सूक्ष्म जीवों को पोषण मिला, जिससे मृदा की जैव विविधता बढ़ी। खेतों में केंचुए और मिट्टी के सूक्ष्म जीव भी लौटने और बढ़ने लगे। इससे धीरे-धीरे मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता भी लौटने लगी। यह पर्यावरण सुधार की दिशा में भी मील का पत्थर होगा। लगातार प्रयोगों से यह भी साफ हुआ कि तीन साल तक निरंतर कृषि-होम्योपैथी के उपयोग से कृषि उपज में स्थिरता के साथ इसमें आश्चर्यजनक वृद्धि भी देखी गई।

शोधकर्ताओं का कहना है कि कृषि-होम्योपैथी की लागत काफी कम होती है। अमूमन एक किसान, जो रासायनिक खादों पर औसतन 20-30 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर व्यय करता है, उसकी लागत होम्योपैथिक दवाओं पर महज 700 रुपए प्रति हेक्टेयर तक हो सकती है। प्रयोग से पता चला कि होम्योपैथिक दवाओं की कुछ मात्रा ने सैकड़ों लीटर पानी में घुले रसायनों को खत्म करने में अपना प्रभावी असर दिखाया। इससे खेती में हानिकारक रसायनों का इस्तेमाल रुकने से फसल की चमक और पौष्टिकता भी बेहतर हुई, जिससे किसानों को उनकी उपज की अच्छी कीमत मिलने लगी।

भारत में तेजी से लोकप्रिय हो रही कृषि-होम्योपैथी की ओर लगभग हर राज्य के किसान तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। भिंडी, मिर्च और दूसरी तमाम सब्जियों के अलावा आलू, गेहूं, मक्का, धान और दलहन-तिलहन में भी यह पद्धति कारगर साबित हो रही है। होम्योपैथी दवाएं वनस्पतियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती हैं। इससे वनस्पतियां और फसलें अपने रोग स्वतः ठीक कर लेते हैं। निश्चित रूप से आने वाले समय में निरंतर शोध और प्रयोगों के बाद कृषि-होम्योपैथी की भी कई शाखाएं सामने आएंगी। इससे रसायनों और उर्वरकों के बोझ से दबी मिट्टी को कोई नया जीवन और जहरीले तत्त्वों से मुक्ति मिलना संभव हो सकेगा। भविष्य में कृषि-होम्योपैथी से मिट्टी-पानी अपने मूल स्वरूप में आकर फिर से हमारी प्रकृति में नई ऊर्जा भरेंगे।

केंद्र सरकार ने एक करोड़ से ज्यादा परिवारों का लक्ष्य किया था तय | उम्मीद | बैंकों में लटक गए अधिकतर मामले, नहीं मिल पाया ऋण

प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना : 80.13 लाख से ज्यादा घरों को है इंतजार

पंकज रोहिला
नई दिल्ली, 12 दिसंबर।

देश में आम जनता प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना से जुड़कर अपने घर बिजली बिल कम करना चाहती है, लेकिन आज भी 80.13 लख से ज्यादा परिवारों को इस योजना में शामिल होने की मंजूरी मिलने का इंतजार है। केंद्र सरकार ने इस योजना के तहत एक करोड़ परिवारों को जोड़ने का लक्ष्य रखा था लेकिन विभिन्न राज्यों की ओर से इस श्रेणी में 1.38 करोड़ आवेदन प्राप्त हुए थे। मंत्रालय के मुताबिक प्राप्त किए गए आवेदनों में अब तक मंत्रालय ने केवल 58.58 लाख पंजीकरण को ही मंजूरी दी है। इस वजह से प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना पीछे है।

प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना का लक्ष्य भारत के सभी घरों को मुफ्त बिजली उपलब्ध कराना था। यह योजना सौर छत क्षमता की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए लागू की गई थी। इसके तहत घरों की छतों पर सौर पैनल लगाने के लिए राज्य सरकार से आर्थिक मदद भी उपलब्ध कराई जाती है। इसके तहत सरकार द्वारा तीन किलोवाट क्षमता के लिए चालीस फीसद की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है। केंद्र सरकार का अनुमान था कि इस योजना के लागू होने से सालाना करीब 75 हजार करोड़ रुपए की बचत होगी। हाल ही में लोकसभा के पटल पर पेश प्रक्कलन समिति की रपट में यह जानकारी दी है।

योजना के तहत घरों की छतों पर सौर पैनल लगाने के लिए राज्य सरकार से आर्थिक मदद भी उपलब्ध कराई जाती है। इसके तहत सरकार द्वारा तीन किलोवाट क्षमता के लिए चालीस फीसद की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है। केंद्र सरकार का अनुमान था कि इस योजना के लागू होने से सालाना करीब 75 हजार करोड़ रुपए की बचत होगी।

रपट में यह भी है कि इस योजना के तहत पहले की तुलना में पंजीकरणों की संख्या में भी कमी आई है। इस क्षेत्र में सबसे अच्छा काम उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, असम और कर्नाटक ने किया है, जबकि बिहार, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, तमिलनाडु, तेलंगाना, पंजाब और कई उत्तर पूर्व राज्य इस योजना के तहत पंजीकरण में पिछड़ रहे हैं। देश में अब तक 17, 01,137 सौर पैनल लाइट लगी हैं। इस मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन गुजरात, महाराष्ट्र और केरल राज्य का रहा है।

इस योजना के तहत ऋण उपलब्ध नहीं करा पाना इस योजना में कम सौर उत्पादन की सबसे बड़ी वजह रही है। इस योजना के तहत 19 मई, 2025 तक कुल 5,31,199 आवेदन ऋण के लिए प्राप्त किए गए थे। इन आवेदनों में से कुल 2,82,240 आवेदनों को ही स्वीकार किया गया है। जांच में यह भी सामने आया है कि स्वीकार किए गए आवेदनों में से 28 फरवरी 2025 तक 1,05,528 आवेदनों को 20001.7 करोड़ रुपए का ऋण उपलब्ध कराया गया।

इस योजना के तहत ऋण अस्वीकार करने की दर पर समिति ने चिंता जाहिर की है क्योंकि बैंकों की ओर से 2,48,959 आवेदनों को अस्वीकार किया गया था। इस व्यवस्था में सुधार के लिए समिति ने मंत्रालय को मानक तय करने की सलाह दी है। समिति ने कहा कि इस पहल से 2030 तक कार्बन उत्सर्जन में 50 फीसद तक कमी लाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इसके अतिरिक्त वर्ष 2070 पूरी अर्थव्यवस्था से कार्बन उत्सर्जन को शून्य करने में सहायता मिलेगी।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने लोकसभा में कहा

पश्चिम एशिया से 5,945 भारतीयों को निकाला गया

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 दिसंबर।

केंद्र सरकार ने शुक्रवार को लोकसभा को सूचित किया कि सुरक्षा की दृष्टि से उसने पिछले तीन साल के दौरान इजराइल, ईरान, सीरिया और इराक से 5,945 भारतीय नागरिकों को निकाला है।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कहा कि इन निकासी अभियानों में 2023 में इजराइल में 'आपरेशन अजय' और 2025 में ईरान और इजराइल में 'आपरेशन सिंधु' शामिल हैं।

उन्होंने कहा, 'सरकार ने 2024 में कुवैत में हुए एक दुखद अग्निकांड में जान गंवाने वाले 45 भारतीय नागरिकों के पार्थिव शरीर को मानवीय आधार पर हवाई मार्ग से लाने का विशेष प्रयास भी किया, जिनमें उत्तर प्रदेश के तीन नागरिक भी शामिल थे।' केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार पश्चिम एशिया सहित विश्व स्तर पर उत्पन्न हो रही किसी भी प्रतिकूल स्थिति पर करीबीनजर रखती है।

जयशंकर ने कहा, 'भारतीय नागरिकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, सरकार ने पिछले तीन वर्ष में पश्चिम एशिया में इजराइल, ईरान, सीरिया और इराक से 5,945 भारतीय नागरिकों को निकाला है, जिनमें 2023 में इजराइल में 'आपरेशन अजय' और 2025 में ईरान और इजराइल में 'आपरेशन सिंधु' शामिल हैं। निकाले गए कुल भारतीय नागरिकों में से 1,474 उत्तर प्रदेश के थे।'

जयशंकर ने कहा, 'भारतीय नागरिकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, सरकार ने पिछले तीन वर्ष में पश्चिम एशिया में इजराइल, ईरान, सीरिया और इराक से 5,945 भारतीय नागरिकों को निकाला है, जिनमें 2023 में इजराइल में 'आपरेशन अजय' और 2025 में ईरान और इजराइल में 'आपरेशन सिंधु' शामिल हैं। निकाले गए कुल भारतीय नागरिकों में से 1,474 उत्तर प्रदेश के थे।' उन्होंने कहा कि सरकार सुरक्षित आश्रय, भोजन, स्थानीय और सीमा पार आवागमन तथा परिवहन सहित रसद संबंधी सहायता प्रदान करती है, जिसके लिए विशेष वाहनों और निकासी उड़ानों की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है।

जयशंकर ने कहा कि सरकार के निकासी अभियानों में सभी भारतीय नागरिकों की सुरक्षा, संरक्षा और कल्याण को प्राथमिकता दी जाती है, चाहे वे किसी भी राज्य के हों।

'विदेशों में भारतीयों की मृत्यु के मामलों में वृद्धि नहीं हुई है'

नई दिल्ली, 12 दिसंबर(ब्यूरो)।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को लोकसभा को सूचित किया कि विदेशों में काम करने या रहने वाले भारतीय नागरिकों की मृत्यु के मामलों की कुल संख्या में हाल के दिनों में कोई महत्त्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई है।

उन्होंने कहा कि इस वर्ष अक्तूबर तक स्वदेश लाए गए भारतीय नागरिकों के शवों की संख्या 5,897 है। आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2016 में यह आंकड़ा 4,167, वर्ष 2017 में 4,222, वर्ष 2018 में 4,205, वर्ष 2019 में 5,291 और वर्ष 2020 में 5,321 रहा। उसके बाद के चार वर्षों में यह आंकड़ा क्रमशः 5,834; 5,946; 6,532 और 7,096 रहा।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा

केंद्र लोगों की भलाई व प्रगति के लिए प्रतिबद्ध

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 दिसंबर।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मणिपुर के सभी समुदायों से शांति, समझ और सुलह के प्रयासों को जारी रखने का शुक्रवार को आह्वान किया और कहा कि केंद्र सरकार इस राज्य के लोगों की भलाई एवं प्रगति के लिए प्रतिबद्ध है। सेनापति जिले में एक स्वागत कार्यक्रम में मुर्मू ने गौरवशाली आदिवासी विरासत वाले इस जिले में आकर अपनी खुशी व्यक्त की।

उन्होंने कहा, 'आज राष्ट्र नुपी लाल स्मृति दिवस मना रहा है, जो सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन लाने में महिलाओं की भूमिका का एक प्रमुख उदाहरण है। मणिपुर में समृद्ध सांस्कृतिक विविधता है और यहां बड़ी संख्या में आदिवासी समुदाय रहते हैं। यह विविधता सेनापति जिले में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। मैंने ताफौ नगा गांव में आयोजित एक स्वागत समारोह में भाग लिया, जहां जिले के आदिवासियों के प्रतिनिधियों ने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया और मैंने विस्थापित लोगों से मुलाकात की।'

> *राष्ट्रपति* मुर्मू ने कहा, 'भारत सरकार मणिपुर में स्थानीय नेताओं, नागरिक समाजों और समुदायों के विकास को सुनिश्चित करने के लिए उनके साथ मिलकर काम कर रही है।

राष्ट्रपति ने यह भी कहा कि सेनापति और कांगपोकपी जिलों में पाई जाने वाली मरम जनजाति को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह के रूप में मान्यता प्राप्त है और यह राज्य का एकमात्र ऐसा समूह है, जो विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह है। उन्होंने कहा, 'मरम की अनूठी संस्कृति भारत की जनजातीय विविधता में योगदान देती है।' मुर्मू ने कहा, 'मणिपुर के आदिवासी समुदायों का विकास और अवसर सुनिश्चित करना और देश की प्रगति में उनकी अधिक भागीदारी सुनिश्चित करना एक राष्ट्रीय प्राथमिकता है।'

मुर्मू ने कहा, 'भारत सरकार मणिपुर में स्थानीय नेताओं, नागरिक समाजों और समुदायों के विकास को सुनिश्चित करने के लिए उनके साथ मिलकर काम कर रही है। केंद्र सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि विकास देश के हर कोने तक पहुंचे। सरकार दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों के विकास पर विशेष ध्यान दे रही है।' उन्होंने कहा, 'मणिपुर की ताकत उसकी विविधता, संस्कृति, भाषाओं और परंपराओं में निहित है।

वैभव सूर्यवंशी की धुआंधार पारी से भारत ने यूएई को 234 रन से हराया

भारतीय बल्लेबाज ने 95 गेंद पर ताबड़तोड़ 171 रन बनाए

दुबई, 12 दिसंबर (भाषा)।

वैभव सूर्यवंशी की 95 गेंद में 171 रन की ताबड़तोड़ पारी से भारत ने अंडर-19 वनडे एशिया कप के अपने शुरुआती मैच में शुक्रवार को यहां यूएई को 234 रन के बड़े अंतर से हराया।

इस 14 साल के खिलाड़ी ने 14 छक्के लगाकर अंडर-19 एकदिवसीय क्रिकेट की एक पारी में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का रेकार्ड कायम किया। उन्होंने अपनी पारी में नौ चौके भी जड़े। सूर्यवंशी की आतिशी पारी के अलावा विहान मल्होत्रा (55 गेंद में 69) और आरोन जार्ज (73 गेंद में 69) की अर्धशतकीय पारियों से भारत ने 50 ओवर में छह विकेट पर रेकार्ड 433 रन बनाए। यह अंडर-19 वनडे में भारत का सर्वाधिक स्कोर होने के साथ एशिया कप इतिहास का भी सर्वोच्च स्कोर है। यूएई की टीम लक्ष्य का पीछा करते हुए कभी भी भारत को टक्कर देने की स्थिति में नहीं दिखी। टीम ने पृथ्वी मधु (50) और उद्धिश सूरी (नाबाद 78) की अर्धशतकीय पारियों से सात विकेट पर 199 रन बनाए।

सूर्यवंशी की 171 रन की पारी अब युवा वनडे में किसी भारतीय द्वारा बनाया गया दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है। यह रेकार्ड अंबाती रायुडु के नाम है जिन्होंने 2002 में इंग्लैंड के खिलाफ नाबाद 177 रन बनाए थे। यह अंडर-19 वनडे में नौवा सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर है। पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने पर सूर्यवंशी ने क्रीज पर आते ही यूएई के गेंदबाजों की खबर लेनी शुरू कर दी। उन्होंने 30 गेंद में अपना अर्धशतक और फिर 56 गेंद में शतक पूरा किया। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने जार्ज के साथ दूसरे विकेट के लिए 212 रन की साझेदारी की। वह 33वें ओवर में स्पिनर सूरी की गेंद पर आउट हुए। उनके आउट होने के बाद मध्य क्रम ने लय बनाए रखी।

अंडर-19 एशिया कप

वैभव सूर्यवंशी

सूर्यवंशी की 171 रन की पारी अब युवा एकदिवसीय में किसी भारतीय द्वारा बनाया गया दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है।

भारतीय खिलाड़ी ने 14 छक्के लगाकर अंडर-19 एकदिवसीय क्रिकेट की एक पारी में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का रेकार्ड कायम किया। उन्होंने अपनी पारी में नौ चौके भी जड़े।

कुश्ती

विनेश फोगाट ने संन्यास से वापसी की, कहा

लास एंजिलिस ओलंपिक में पदक जीतना लक्ष्य

नई दिल्ली, 12 दिसंबर (भाषा)।

भारत की शीर्ष पहलवान विनेश फोगाट ने शुक्रवार को कहा कि उनका जोश और जज्बा अब भी पहले की तरह कायम है और वह 2028 में होने वाले लास एंजिलिस ओलंपिक खेलों में एक बार फिर से ओलंपिक पदक जीतने के लिए संन्यास से वापसी करेगी।

इस 31 वर्षीय खिलाड़ी ने पिछले साल पेरिस ओलंपिक खेलों में मिली निराशा के बाद खेल से दूरी बना ली थी। पेरिस ओलंपिक में उन्हें महिलाओं के 50 किलोग्राम वर्ग के स्वर्ण पदक मुकाबले से ठीक पहले निर्धारित वजन सीमा से 100 ग्राम अधिक वजन होने के कारण अयोग्य घोषित कर दिया गया था। फोगाट ने खेल पंचाट (सीएएस) में संयुक्त रूप से रजत पदक देने की मांग की थी, लेकिन फैसला नहीं बदला गया, जिसके चलते उन्होंने संन्यास की घोषणा की और राजनीति में प्रवेश किया। वह हरियाणा के जुलाना निर्वाचन क्षेत्र से विधायक चुनी गईं। विनेश ने सोशल मीडिया पर जारी एक पोस्ट में कहा,'लोग मुझसे पूछते रहे कि क्या पेरिस में ही मेरे सफर का अंत हो गया है। लंबे समय तक मेरे पास इसका जवाब नहीं था। मुझे मैट से, दबाव से, उम्मीदों से, यहां तक कि अपनी महत्वाकांक्षाओं से भी दूर रहने की जरूरत थी। कई वर्षों में पहली बार मैंने चैन की सांस ली।'

विनेश ने कहा कि वह नए जोश और जज्बे तथा अपने बेटे के साथ लास एंजिल्स ओलंपिक के लिए अपने सफर को शुरू करेगी। उन्होंने कहा,'इसलिए मैं आज यहां पर मौजूद हूं तथा पूरी निडरता और दृढ़ संकल्प के साथ लास एंजिलिस ओलंपिक की तरफ कदम बढ़ा रही हूं। इस बार मैं अकेली नहीं हूं। मेरा बेटा भी मेरी टीम में शामिल हो रहा है। वह मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा है।

Source:- दैनिक जागरण

जीविका दीदियां राज्य की आर्थिक स्थिति में सुधार का आधार

बोले नीतीश

विनय कुमार पांडेय • जागरण

- कहा-हर क्षेत्र में जीविका दीदियां मेहनत और लगन से कर रहीं काम, सरकार कर रही सहयोग
- फुलवरिया जलाशय में 'ऊपर बिजली, नीचे मछली' व रजौली में औद्योगिक क्षेत्र की ली जानकारी

नवादा : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जीविका समूह की दीदियों से कहा कि आप सभी काफी अच्छा काम कर रही हैं। इससे बिहार की आर्थिक स्थिति में तेजी से सुधार हो रहा है। हर क्षेत्र में जीविका दीदियां पूरी मेहनत और लगन से काम कर रही हैं। सरकार आपकी हर जरूरतों को ससमय पूरा करने की हर संभव कोशिश करती है। कहा, जीविका दीदियां बिहार की आर्थिक स्थिति में सुधार का आधार हैं।

मुख्यमंत्री शुक्रवार को नवादा जिले के रजौली प्रखंड स्थित चिरैला पहुंचे थे। मुख्यमंत्री ने चिरैला स्थित उत्क्रमित उच्च माध्यमिक (2) विद्यालय प्रांगण में समाज कल्याण, शिक्षा विभाग, जीविका दीदियों व छात्र-छात्राओं द्वारा लगाए गए स्टाल का अवलोकन किया। इसके बाद मुख्यमंत्री ने 137 जीविका स्वयं सहायता समूह को विभिन्न बैंकों के प्रदत्त ऋण से संबंधित एक करोड़ 29 लाख रुपये का सांकेतिक चेक प्रदान किया।

नवादा में फुलवरिया जलाशय पर योजनाओं का जायजा लेने पहुंचे सीएम नीतीश कुमार। साथ में उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी व मंत्री विजय कुमार चौधरी • सौ. आइपीआरडी

यहां के बाद मुख्यमंत्री रजौली के फुलवरिया जलाशय पहुंचे। 30 एकड़ में फैले फुलवरिया जलाशय में 'ऊपर बिजली, नीचे मछली' परियोजना के तहत 10 मेगावाट का फ्लोटिंग सोलर संयंत्र लगाया जा रहा है। जिससे आसपास के पहाड़ी गांवों, लघु व कुटीर उद्योगों को निर्बाध बिजली आपूर्ति होगी। यहीं से पानी फिल्टर कर आसपास के 90 गांवों के घरों में आपूर्ति की जा रही है। इस मौके पर उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, जल संसाधन सह संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी समेत कई वरीय अधिकारी थे।

30 एकड़ में फुलवरिया जलाशय का विस्तार

90 गावों में फिल्टर जल की हो रही है आपूर्ति

100 किग्रा वर्ष में प्रति हेक्टेयर मछली उत्पादन

10 मेगावाट बिजली उत्पादन फ्लोटिंग सोलर संयंत्र से

2027 में देश में पहली बार होगी डिजिटल जनगणना

डिजिटल रूप से जनगणना में जातियों का डाटा भी होगा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने शुक्रवार को महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए जनगणना-2027 के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी। प्रस्ताव के अनुसार 11,718.24 करोड़ रुपये की लागत से देश में पहली बार डिजिटल जनगणना कराई जाएगी। यह संपूर्ण प्रक्रिया दो चरणों की है। पहले चरण में अप्रैल से सितंबर, 2026 तक घरों की सूची बनाकर आवासों की गणना कराई जाएगी, जबकि फरवरी, 2027 में जनगणना होगी। दूसरे चरण में ही जातियों का इलेक्ट्रानिक डाटा भी शामिल किया जाएगा। केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख एवं जम्मू-कश्मीर के बर्फ से प्रभावित क्षेत्रों सहित हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में दूसरे चरण में जनगणना सितंबर, 2026 में होगी।

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि लगभग 30 लाख क्षेत्रीय कर्मचारी लगाए जाएंगे। सभी जनगणना कर्मचारियों को जनगणना कार्य के लिए उचित मानदेय दिया जाएगा क्योंकि वे नियमित कामों के अलावा इस काम को करेंगे। 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 121.02 करोड़ थी।

केंद्रीय कैबिनेट का निर्णय

- अप्रैल, 2026 से शुरू होगी प्रक्रिया, केंद्रीय कैबिनेट ने 11,718.24 करोड़ स्वीकृत किए
- आजादी के बाद होगी 16वीं जनगणना, 30 लाख से अधिक कर्मचारी किए जाएंगे तैनात

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव कैबिनेट के फैसलों की जानकारी देते हुए। • पेट्र

यह होगी प्रक्रिया

- हर घर में जाना होगा। हाउस लिस्टिंग व आवास गणना और जनगणना के लिए अलग-अलग प्रश्नावली तैयार होगी।
- पहली बार जनगणना में डाटा संग्रह मोबाइल एप के जरिये होगा।
- रीयल टाइम निगरानी के लिए सेंसस मैनेजमेंट एंड मानीटरिंग नामक पोर्टल विकसित किया गया है।
- जनगणना, 2027 के लिए हाउस लिस्टिंग ब्लाक क्रिएटर वेब मैप एप है।
- आजादी के बाद 16वीं बार हो रही जनगणना में नागरिकों को स्वयं गिनती करने का विकल्प भी दिया जाएगा।
- जनगणना का डाटा सबसे निचली प्रशासनिक इकाई यानी गांव व वार्ड स्तर तक सभी के साथ साझा किया जाएगा।

उच्च शिक्षा का एक ही नियामक वीमा में 100% एफडीआइ

नई दिल्ली : उच्च शिक्षा के लिए प्रस्तावित नियामक यूजीसी, एआइसीटीई व एनसीटीई की जगह लेगा। बीमा क्षेत्र में एफडीआइ की सीमा को 100 प्रतिशत करने के विधेयक को मंजूरी दे दी। विस्तृत खबर-पेज 19

इन मानकों पर मिलेंगे आंकड़े

जनगणना के जरिये घरों की हालत, सुविधाएं व परिसंपत्तियां, जनसांख्यिकी, धर्म, एससी व एसटी, भाषा, साक्षरता व शिक्षा, आर्थिक गतिविधि, पलायन (माइग्रेशन) और फर्टिलिटी जैसे अलग-अलग मानकों पर माइक्रो-लेवल का डाटा हासिल होगा।

मखाने का उत्पादन बढ़ाने पर 476 .03 करोड़ रुपये होंगे खर्च

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना: बिहार के साथ ही देश में मखाना उत्पादन बढ़ाने, तकनीक हस्तांतरण, बाजार विस्तार, अनुदान, स्टार्टअप एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने की स्वीकृति दी गई। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव डा. देवेश चतुर्वेदी की अध्यक्षता में शुक्रवार को संपन्न हुई राष्ट्रीय मखाना बोर्ड की पहली बैठक ली गई। नई दिल्ली स्थित कृषि भवन में हुई बैठक में मखाना क्षेत्र के विकास के लिए सरकार ने 476.03 करोड़ रुपये की लागत से वर्ष 2025-26 से 2030-31 तक संचालित होने वाली केंद्रीय मखाना विकास योजना को मंजूरी दी गई। इस योजना से अनुसंधान, बीज उत्पादन, किसानों की क्षमता-वृद्धि, कटाई और प्रसंस्करण तकनीक, मूल्य संवर्धन, मार्केटिंग एवं निर्यात को विशेष प्रोत्साहन मिलेगा। पहल से किसानों एवं नए उद्यमियों को सीधा लाभ मिलेगा।

बैठक में केंद्रीय मखाना विकास योजना एवं राष्ट्रीय मखाना बोर्ड के क्रियान्वयन की प्रक्रिया औपचारिक रूप से आरंभ की गई। राज्यों तथा अनुसंधान संस्थानों द्वारा प्रस्तुत वार्षिक कार्य योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की गई और विभिन्न घटकों पर बजट आवंटन को मंजूरी दी गई। प्रमुख रूप

राष्ट्रीय मखाना बोर्ड को दिया गया विभिन्न राज्यों के प्रशिक्षकों को मूल्य श्रृंखला की नवीनतम तकनीकों पर प्रशिक्षण का दायित्व

से बीज आवश्यकता को एकीकृत करने तथा वर्तमान और आगामी वर्ष के लिए गुणवत्ता युक्त बीजों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के साथ ही अन्य शोध संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया गया। कृषि विश्वविद्यालय, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय और एनआरसी मखाना, दरभंगा को विभिन्न राज्यों के प्रशिक्षकों को मखाना मूल्य श्रृंखला की नवीनतम तकनीकों पर प्रशिक्षण प्रदान करने की जिम्मेदारी दी गई, ताकि पारंपरिक और गैर-पारंपरिक दोनों क्षेत्रों में मखाना उत्पादन में वृद्धि हो सके। बैठक में बिहार के कृषि विभाग के प्रधान सचिव पंकज कुमार एवं बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के कुलपति डा. डीआर सिंह उपस्थित रहे।

छोटे निर्यातकों की सुध ले सरकार

अजय सहाय

यह सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए कि भारत की ई-कामर्स निर्यात यात्रा डिजिटल निर्भरता की कहानी न बन जाए

भारत आज अपने निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। देश के छह करोड़ से अधिक सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) विश्व के सबसे बड़े कारीगर, शिल्पकार और छोटे उद्यमी समुदाय की आधारशिला हैं। इन छोटे उद्यमियों, हथकरघा बुनकरों और हस्तशिल्प कलाकारों को ई-कामर्स निर्यात के माध्यम से वैश्विक बाजारों तक पहुंचने का एक नया और प्रभावी मार्ग मिला है। अंतरराष्ट्रीय आनलाइन प्लेटफार्मों ने भारत के छोटे विक्रेताओं को बिना किसी विदेशी कार्यालय के दुनिया के 200 से अधिक देशों में उपभोक्ताओं तक पहुंचने में सक्षम बनाया है। डिजिटल बाजार और भारत की रचनात्मक, किफायती उत्पादन प्रणाली ने वैश्विक व्यापार में छोटे भारतीय विक्रेताओं के लिए अवसरों का विस्तार किया है। पिछले एक दशक में ई-कामर्स आधारित डायरेक्ट-टू-कंज्यूमर माडल ने भारत के छोटे उत्पादकों को उल्लेखनीय सशक्तीकरण दिया है। इस माडल में उत्पाद विदेशी ग्राहकों द्वारा आर्डर मिलते ही सीधे भारत से भेजे जाते हैं, जिससे प्रवेश लागत कम होती है और घर-आधारित उद्यमी भी अंतरराष्ट्रीय व्यापार शुरू कर पाते हैं। भारत के हस्तशिल्प, वस्त्र, आभूषण, प्राकृतिक और पारंपरिक उत्पादों की वैश्विक मांग बढ़ रही है। यह माडल विशेषकर छोटे उद्यमों के लिए आय और पहचान का स्रोत बना है, भले ही उन्हें कस्टम्स, भुगतान निपटान और कर संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ा हो। अब एक नया परिवर्तन इस पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करने वाला है। बड़े वैश्विक ई-कामर्स भारत से वेयरहाउस आधारित निर्यात माडल की अनुमति चाहते हैं, जिसमें भारतीय विक्रेता माल को मार्केट प्लेस के घरेलू वेयरहाउस में जमा करेंगे और उसके बाद मार्केट प्लेस स्वयं इन उत्पादों का निर्यात कर उन्हें विदेश में बेचेगा।

उक्त परिवर्तन भारतीय विक्रेताओं की भूमिका को बदल देगा। वे अब निर्यातक नहीं रहेंगे, बल्कि केवल घरेलू आपूर्तिकर्ता बनकर रह जाएंगे। निर्यातक के रूप में मार्केट प्लेस मूल्य निर्धारण, इन्वेंटरी, विदेशी वितरण और फारेक्स प्राप्ति पर पूरा नियंत्रण रखेगा। हालांकि चीन, वियतनाम और मलेशिया सरीखे देशों में यह माडल पहले से अपनाया जा रहा है, लेकिन भारतीय संदर्भ में इनके गहरे और दीर्घकालिक प्रभाव चिंताजनक हैं। वेयरहाउस माडल से छोटे विक्रेताओं का मूल्य निर्धारण पर नियंत्रण समाप्त हो सकता है, क्योंकि मार्केट प्लेस सभी आपूर्तिकर्ताओं की लागत संरचना

अवधेश रावणूत

जानकर कीमतों पर दबाव डाल सकता है। इससे छोटे विक्रेता 'प्राइस-टेकर' बन जाएंगे और उनके लाभांश में भारी कमी हो सकती है। विदेशी बाजार में मिलने वाला पूरा रिटेल मार्जिन मार्केट प्लेस अपने पास रख सकता है, जबकि भारतीय विक्रेता को केवल थोक दर प्राप्त होगी, जो अंतिम बिक्री मूल्य का एक छोटा हिस्सा होती है।

इस माडल का प्रभाव यह भी है कि भारत के निर्यात मूल्य में वास्तविक कमी आ सकती है। आज जब एक भारतीय विक्रेता सीधे 2,000 रुपये की कालीन विदेश में बेचता है, तो पूरे 2,000 रुपये भारत के फारेक्स में दर्ज होते हैं, परंतु वेयरहाउस माडल में वही कालीन 1,100-1,200 रुपये में मार्केट प्लेस द्वारा खरीदी जाएगी और इसी राशि को भारत के निर्यात मूल्य के रूप में दर्ज किया जाएगा। इससे न केवल भारत के आधिकारिक निर्यात मूल्य घटेंगे, बल्कि कई मामलों में मार्केट प्लेस अपने विदेश स्थित सहायक कंपनियों के माध्यम से मुनाफा भी विदेश में दर्ज कर सकते हैं, जिससे भारत का कर आधार भी कम होगा। जैसे-जैसे मार्केट प्लेस कम दरों पर बड़े पैमाने पर खरीद करेगा, लाखों कारीगरों का लाभ कम हो सकता है। लाभ में कमी आने पर कई उद्यमी गुणवत्ता से समझौता कर सकते हैं, जिससे भारत की वैश्विक ब्रांड प्रतिष्ठा को नुकसान होगा। जब निर्यात मार्केट प्लेस के नाम पर होगा तो भारतीय उत्पादों की पहचान एवं विशिष्टता खो सकती है।

भारत की व्यापार और एमएसएमई नीति लंबे समय से आत्मनिर्भरता, मूल्य संवर्धन और डिजिटल सशक्तीकरण पर आधारित रही है। बन डिस्ट्रिक्ट बन प्रोडक्ट, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया और विदेशी व्यापार नीति जैसी पहलें छोटे उद्यमियों को वैश्विक बाजार से सीधे जोड़ने की दिशा में काम कर रही हैं। ऐसे में वेयरहाउस माडल उस उद्देश्य से भी उलट है, जिसका लक्ष्य डिजिटल बाजारों का लोकतंत्रीकरण है। भारत के लिए नीति-निर्माण में संतुलन बनाना आवश्यक है, लेकिन छोटे निर्यातकों की स्वायत्तता और पहचान खोकर नहीं। भारत चाहे तो पीपीपी माडल के तहत तटस्थ ई-कामर्स एक्सपोर्ट हब विकसित कर सकता है, जो एमएसएमई के उत्पादों को एकत्र कर निर्यात में मदद करें, पर निर्यातक वही रहें।

वेयरहाउस माडल सतही रूप से सुविधाजनक दिखाई देता है, लेकिन यह भारत के जमीनी निर्यात ढांचे को कमजोर कर सकता है और लाखों उद्यमियों को साधारण आपूर्तिकर्ता में बदल सकता है। भारत की ई-कामर्स निर्यात यात्रा अब तक डिजिटल समावेशन, महिला सशक्तीकरण और रचनात्मक उद्यमिता की कहानी रही है। यह सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए कि यह आगे चलकर डिजिटल निर्भरता की कहानी न बन जाए। भारत को विदेशी प्लेटफार्म-प्रधान वेयरहाउस माडल नहीं, एक सशक्त और मूल्य-साझा करने वाला डिजिटल निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र चाहिए। छोटे निर्यातकों की रक्षा करना किसी संरक्षणवाद का संकेत नहीं है, बल्कि एक आत्मनिर्भर, समावेशी और मूल्य केंद्रित निर्यात भविष्य के लिए आवश्यक आर्थिक दूरदर्शिता है।

डिजिटल युग में डाटा, प्लेटफार्म-नियंत्रण के साथ भौतिक व्यापार अवसंरचना भी महत्वपूर्ण है। भारत को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छोटे उत्पादकों की स्वायत्तता सुरक्षित रहे, मूल्य पारदर्शिता बनी रहे, निर्यात से प्राप्त लाभ भारत में ही दर्ज हों।

(लेखक फियो के महानिदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं)
response@jagran.com

विश्वस्तरीय बनेगा भीमबांध वन्यजीव अभ्यारण : सम्राट

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : मुंगेर का भीमबांध वन्यजीव अभ्यारण विश्वस्तरीय बनेगा। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के प्रधान सचिव के साथ बैठक में इस परियोजना का प्रस्ताव जल्द तैयार करने का निर्देश दिया है।

उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी

उपमुख्यमंत्री ने बताया कि प्रस्तावित परियोजना में वन अनुभव केंद्र सह कार्यशाला एवं प्रशिक्षण केंद्र, वेलनेस सेंटर, योग ग्राम, आयुर्वेद केंद्र, इनडोर गतिविधि क्षेत्र, कैफेटेरिया, प्रशासनिक भवन, रेस्तरां और सभा-कक्ष, गरम पानी की झील, ट्री हाउस, व्यू प्वाइंट, ट्रैकिंग मार्ग, लैंडस्केपिंग, भीम-सेन कुंड, आर्किड एवं फल उद्यान, वाच टावरआदि के निर्माण को शामिल किया जाएगा। विकास प्रस्ताव में बेलाटांड़, चोरमारा, नारोकाल, बहेरातानड़, बघेल, कुकुरझाप धाम, खड़गपुर झील और भौराकोल झील क्षेत्रों को भी जोड़ा जाए। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों के पर्यटकीय विकास से भीमबांध वन्यजीव अभ्यारण की और वृहत पहचान स्थापित होगी।

ट्रंप बनाएंगे पांच महाशक्तियों का मंच 'सी5', भारत का होगा दबदबा

पोलिटिको मैग्जीन का दावा, खस्ताहाल होते यूरोप का साथ छोड़ने के मूड में अमेरिका

- सी5 समूह में होंगे- भारत, चीन, रूस, जापान और अमेरिका
- ट्रंप ने दिए संकेत- अगली सदी सी5 की, हालांकि आधिकारिक दावा नहीं

डोनाल्ड ट्रंप। • (फाइल) रायटर

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप एक नए 'कोर-5' (हार्ड-पावर समूह) समूह के गठन की योजना बना रहे हैं। इसमें दुनिया की पांच सबसे बड़ी महाशक्तियां होंगी, जिसमें अमेरिका, चीन, रूस और जापान के साथ-साथ भारत भी शामिल होगा। माना जा रहा है कि ट्रंप इसे जी7 समूह के विकल्प के तौर पर बनाना चाहते हैं, जिसमें यूरोप का दबदबा है। अमेरिकी प्रकाशन 'पोलिटिको' ने दावा किया है कि कोर-5 ग्रुप का पहला एजेंडा भी तय हो गया है - मिडिल ईस्ट सिक्योरिटी, जिसमें इजरायल और सऊदी अरब के बीच रिश्ते सामान्य करने पर ध्यान दिया जाएगा।

'पोलिटिको' ने बताया कि नए हार्ड-पावर समूह का विचार राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के एक लंबे, अप्रकाशित संस्करण में सामने आया था, जिसे व्हाइट हाउस ने पिछले सप्ताह प्रकाशित किया था। हालांकि, इसको लेकर अब तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है, व्हाइट हाउस ने दस्तावेज के अस्तित्व से इनकार किया है। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव हन्ना केली ने कहा है कि 33 पृष्ठों की आधिकारिक योजना का 'कोई वैकल्पिक, निजी या गुप्त संस्करण' मौजूद नहीं है। हालांकि, राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस विचार में "ट्रंपवादी" झलक मिलती है।

नई विश्व व्यवस्था बनाने पर जोर बता दें कि यह रिपोर्ट ऐसे वक्त पर आई है, जब अमेरिका में पहले से ही बहस चल रही है कि ट्रंप प्रशासन का दूसरा कार्यकाल विश्व व्यवस्था में कितना बड़ा बदलाव लाने जा रहा है। यह विचार जी-7 और जी-20 जैसे मौजूदा वैश्विक मंचों को बहुध्रुवीय दुनिया के लिए अपर्याप्त मानता है और प्रमुख जनसंख्या और सैन्य-आर्थिक शक्तियों के बीच समझौते करने को प्राथमिकता देता है। दरअसल अभी जी7 का सदस्य होने के लिए दो आवश्यक शर्तें हैं- वह देश अमीर हो और वहां लोकतंत्र हो। सी5 में ऐसी कोई व्याख्या नहीं होगी।

ट्रंप का अलग नजरिया दिखाता है सी5 : बाइडेन सरकार में अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में यूरोपीय मामलों के डायरेक्टर के रूप में काम करने वाले टोरे तीसिग ने पोलिटिको को बताया कि राष्ट्रपति ट्रंप दुनिया को अलग नजरिए से देखते हैं। वह ऐसी दुनिया बनाना चाहते हैं, जो किसी विचार में न बंधा हो और जहां मजबूत देश अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए अन्य महाशक्तियों के साथ मिलकर काम करते हों।

यूरोप के साथ नाटो का भी होगा खेल खत्म : यूरोप को सी5 में शामिल न करना ये दर्शाता है कि ट्रंप रूस को एक ऐसी शक्ति के रूप में देखते हैं, जो यूरोप में अपना दबदबा कायम करने में सक्षम है। ट्रंप का मानना है कि अब यूरोप और नाटो अमेरिका के लिए फायदेमंद नहीं रहे हैं। वह लंबे समय से नाटो सदस्य देशों की आलोचना कर रहे हैं और कई बार फंड में कटौती करने की धमकी भी दे चुके हैं।

आइएमएफ के मुताबिक सी5 देशों की स्थिति

अमेरिका- सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था
- 34.3 करोड़ की आबादी
- 30.6 खरब डालर की जीडीपी
- 2.8% जीडीपी विकास दर

चीन- दुनिया की दूसरी बड़ी आर्थिकी
- 141 करोड़ की आबादी
- 19.4 खरब डालर की जीडीपी
- 5% जीडीपी विकास दर

जापान- दुनिया की चौथी बड़ी इकोनमी
- 12.4 करोड़ की आबादी
- 4.28 खरब डालर की जीडीपी
- 1.1% जीडीपी विकास दर

भारत- पांचवी बड़ी आर्थिक शक्ति
- 140 करोड़ की आबादी
- 4 खरब डालर की जीडीपी
- 6.5% जीडीपी विकास दर

रूस- द नौवी बड़ी अर्थव्यवस्था
- 14.6 करोड़ की आबादी
- 2.5 खरब डालर की जीडीपी
- 4.1% विकास दर

तीसरे विश्व युद्ध में बदल सकता है रूस-यूक्रेन युद्ध

वाशिंगटन, एएनआइ : अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चेताने वाले अंदाज में कहा है कि रूस-यूक्रेन युद्ध वैश्विक टकराव की ओर बढ़ रहा है और इसका अंत तीसरे विश्व युद्ध के रूप में होने की आशंका है। ट्रंप ने यह बात व्हाइट हाउस में संवाददाताओं से कही है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, रूस-यूक्रेन युद्ध में केवल नवंबर महीने में 25 हजार लोग मारे गए। मृतकों में ज्यादातर दोनों देशों के सैनिक थे। उन्होंने लगातार हो रहे खूनखराबे पर निराशा जाहिर की और इसके जल्द खत्म होने की इच्छा जताई। ट्रंप ने कहा, जहां पर बम गिरता है-वहां पर कई निर्दोष भी मारे जाते हैं। इसलिए वह मौतों के सिलसिले में खत्म करना चाहते हैं। अगर यह युद्ध नहीं रुका तो इसके विश्व युद्ध में तब्दील होने का खतरा है। निश्चित तौर पर हम उसमें होने वाली बर्बादी को नहीं देखना चाहेंगे। इससे पहले व्हाइट हाउस की प्रेस सेक्रेटरी कैरोलिन लेविट ने कहा, युद्ध को लेकर दोनों पक्षों के रुख से राष्ट्रपति ट्रंप बेहद निराश हैं। वह युद्ध रुकवाने के लिए केवल बैठक-मुलाकात करने के इच्छुक नहीं हैं। लेविट ने कहा, राष्ट्रपति चार वर्ष से जारी युद्ध को खत्म करवाने के लिए अब बैठकें नहीं बल्कि नतीजा चाहते हैं।

होमस्टे पहली पसंद, जैविक उत्पाद का लें आनंद

जागरण संवाददाता, पटना: एसोसिएशन फार कंजर्वेशन एंड टूरिज्म की ओर से सिटी सेंटर माल में सातवें हिमालयन आरेंज टूरिज्म फेस्टिवल आयोजित किया गया है। फेस्टिवल में हिमालयी संतरे, पारंपरिक हस्तशिल्प, स्थानीय भोजन, एग्रो-टूरिज्म, होमस्टे की जानकारी, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, विभिन्न पहाड़ी क्षेत्रों के उत्पाद को प्रदर्शित किया जा रहा है।

होटल का किराया अधिक होने से लोग होमस्टे को अधिक पसंद कर रहे हैं। पर्यटन स्थल के आसपास पर्यटकों को होमस्टे आसानी से मिल जा रहा है। इससे घर बैठे पैसा भी लोग कमा रहे हैं। खासकर यह पहाड़ी इलाकों में देखने को मिल रहा है। इसमें पर्यटन को रहने के लिए बेड और ब्रेकफास्ट सहित अन्य सुविधाएं भी दी जा रही हैं।

होमस्टे में खिलाया जाता है पारंपरिक खाना: दार्जिलिंग के बुद्धा सिंह मोकटन ने बताया कि दूसरे राज्य से आने वाले लोग यहां तीन दिनों तक होमस्टे कर सकते हैं। इस दौरान प्रत्येक दिन पारंपरिक खाना खिलाया जाता है। वहीं सबसे कम का पैकेज 1500 का है। सबसे महंगा पैकेज 2500 का है। दोनों पैकेज में एक बार ब्रेकफास्ट कराया जाता है। वहीं पर्यटकों को घूमने के लिए छोटी गाड़ियों का किराया हर दिन तीन हजार लिया जाता है। गर्मी की छुट्टी, दुर्गा पूजा और क्रिसमस के मौके पर होमस्टे में भाड़ा रहता है।

- एसोसिएशन फार कंजर्वेशन एंड टूरिज्म की ओर से सिटी सेंटर माल में सातवें हिमालयन आरेंज टूरिज्म फेस्टिवल का आयोजन

खजूर का गुड़ लोग कर रहे पसंद

सिलिगुड़ी के संडेहाट में जैविक खाद से बने उत्पाद बिक रहे हैं। डौली वर्मा ने बताया कि तेजपत्ता, लेमन ग्रास, धना, दालचीनी, ग्रीन टी खुद से तैयार किया गया है। वहीं खजूर के पेड़ से गुड़ तैयार किया गया है। साथ ही होम मेड सामग्री भी बिक रही है।उन्होंने बताया कि दो दिनों यहां का माहौल अच्छा रहा।

होमस्टे में रहने के साथ खिलाया जाता है खाना: नेपाल होमस्टे में वहां की संस्कृति को दिखाया जाता है। यहां रहने के एक हजार शुल्क लिया जाता है। साथ ही सुबह में नाश्ता और रात में खाना भी खिलाया जाता है। होमस्टे के सुरेंद्र प्रधान ने बताया कि नेपाल आकर बुक कर सकते हैं। होमस्टे में रहने वाले लोगों को गाइड भी दिया जाता है। जिसका शुल्क प्रत्येक दिन दो से तीन हजार है।

बिक रही जैविक नारंगी: फेस्टिवल में दार्जिलिंग के जैविक नारंगी का स्टाल लगाया गया है। शिवास दास ने बताया कि स्टाल पर जैविक नारंगी की बिक्री की जा रही है। यह नारंगी खुद के बाग में लगाया गया है। इसका स्वाद आम नारंगी से अलग है। इसका छिलका पतला है। यह केवल दिसंबर और जनवरी में ही मिलता है। कहा कि बिहार में आकर अच्छा लग रहा है।

मेथी की अधिक मांग: सिक्किम लेगशिप के स्टाल पर सोयाबीन और मेथी का आचार की बिक्री अधिक हो रही है। जैविक फाफड़ का कोदो, मूंग दाल, हल्दी, मक्की का चावल भी लोग खूब खरीद रहे हैं। चंद्रा ग्रूम ने बताया कि सोयाबीन का आचार सबसे अधिक बिक रहा है।